मक्तबतुल मदीना हिन्द
MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 411
Weekly Booklet : 411

Shane Hasanaine Karimain ma Aashura Ke Fazaail (Hindi)

शाने ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا

मअ़ आ़शूरा के फ़ज़ाइल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के 2 बयानात का मज्मूआ़

सफ़ह़ात : 17

• शफ़्क़ते मुस्त़फ़ा मरह़बा ! मरह़बा ! 03
• आ़शूरा का दिन कैसे गुज़ारें......? 10
• नवासए रसूल की इबादात 07
• ख़ैराते आ़शूरा की बरकात 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

शाने ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) मअ़ आ़शूरा के फ़ज़ाइल[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"शाने ह़सनैने करीमैन मअ़ आ़शूरा के फ़ज़ाइल"** पढ़ या सुन ले उसे आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत बना और मां बाप और ख़ानदान समेत उसे बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ न पढ़ने का वबाल

ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कन्जूस है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा, फिर उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा। (ترمذی، 5/321، حدیث:3557)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

शाने ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ

मश्हूर सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं जब (नवासए रसूल ह़ज़रते इमाम) ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ को देखता तो मेरी आंखों

---

[1]... 6 और 10 मुह़र्रम शरीफ़ 1445 हिजरी मुताबिक़ 24 और 28 जूलाई 2023 को दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी मुज़ाकरे से पहले आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत के दरमियान होने वाले अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के 2 बयानात का तह़रीरी गुलदस्ता मअ़ ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़ा।

से आंसू जारी हो जाते, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन बाहर तशरीफ़ लाए, मुझे मस्जिद में देखा, मेरा हाथ पकड़ा, मैं साथ चल पड़ा, हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से कोई बात न की यहां तक कि हम बनू कैनूक़ाअ़ के बाज़ार में दाख़िल हुए और फिर हम वहां से वापस आए तो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "छोटा बच्चा कहां है, उसे मेरे पास लाओ !" ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा (इमामे) ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ आए और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मत भरी गोद में बैठ गए, सुल्त़ाने दो जहां صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक उन के मुबारक मुंह में डाल दी और तीन मरतबा इर्शाद फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं इसे मह़बूब (या'नी प्यारा) रखता हूं तू भी इसे मह़बूब (या'नी प्यारा) रख और जो इस से मह़ब्बत करता हो उसे भी मह़बूब (या'नी प्यारा) रख ।"

(الادب المفرد، ص304، حدیث1183 ملتقطاً)

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं   कीजे रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 77)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : ख़न्दां : हंसता हुवा, मुस्कुराता हुवा । **मिसाले गुल :** फूल की त़रह़ ।

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** आप को उन दो फूलों का वासित़ा देता हूं जिन को आप ने अपने दो फूल कहा, क़ियामत के दिन जब अह़मद रज़ा उठे तो उस वक़्त येह फूल की त़रह़ मुस्कुरा रहा हो ।

काश ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के सदक़े हमारे ह़क़ में भी येह दुआ़ क़बूल हो । हम ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا), आ'ला ह़ज़रत और तमाम औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم के दर के फ़क़ीर हैं, **अल्लाह** पाक हमें इन का ही फ़क़ीर रखे ।

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों को फ़रमाया कि येह दोनों मेरे फूल हैं। (بخاری،2/547،حدیث:3753) तो आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने इस ह़दीस को अपने मक्त़अ़ (कलाम का सब से आख़िरी शे'र जिस में शाइ़र अपना तख़ल्लुस ज़िक्र करे) में इस्ति'माल फ़रमाया है।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

शहज़ादए आ़ली वक़ार की विलादत शरीफ़ (Blessed Birth)

ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे अ़र्श मक़ाम अबू मुह़म्मद ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की विलादते बा सआ़दत 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी में हुई। (الطبقات الکبیر لابن سعد، 6/352) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ का मुबारक नाम : ह़सन, कुन्यत : अबू मुह़म्मद और अल्क़ाब (या'नी Titles) : तक़ी, सय्यिद, सिब्ते़ **रसूलुल्लाह** और सिब्ते़ अक्बर है, आप को रैह़ानतुर्रसूल (या'नी **रसूलुल्लाह** के फूल) भी कहते हैं।

हम शक्ले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ादिमे नबी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है कि (इमामे) ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ) से बढ़ कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलता जुलता कोई भी शख़्स न था। (بخاری،2/547،حدیث:3752)

शफ्क़ते मुस्त़फ़ा मरह़बा ! मरह़बा !

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व मुस्त़फ़ा ! नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हमारे आक़ा इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से बड़ी मह़ब्बत फ़रमाते थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को कभी आग़ोशे शफ़्क़त (या'नी मुबारक गोद) में उठाए तो कभी दोशे अक़्दस

(या'नी मुबारक कन्धों) पर सुवार किये हुए घर से बाहर तशरीफ़ लाते, कभी आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ को देखने और प्यार करने के लिये सय्यिदह फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के घर पर तशरीफ़ ले जाते। ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللہُ عَنْہ भी आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बेह़द मानूस हो (या'नी हिल मिल) गए थे कि कभी नमाज़ की ह़ालत में मुबारक पीठ पर सुवार हो जाते।

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की　　ज़हरा है कली जिस में ह़ुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ज़रते ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मह़ब्बत

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (इमाम) ह़सन बिन अ़ली (رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا) को कन्धे पर उठाए हुए हैं और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर रहे हैं : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّہٗ فَاَحِبَّہٗ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं इस से मह़ब्बत करता हूं तू भी इस से मह़ब्बत फ़रमा।　(ترمذی، 5/432، حدیث:3808)

राकिबे दोशे शहन्शाहे उमम　　या ह़सन इब्ने अ़ली कर दो करम

फ़ाति़मा के लाल ह़ैदर के पिसर　　अपनी उल्फ़त दो मुझे दो अपना ग़म

(वसाइले फ़िरदौस, स. 37)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

राहे ख़ुदा में सदक़ा व ख़ैरात

नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ के मकाने आ़लीशान पर एक फ़क़ीर मदीनए पाक की

गलियों से होता हुवा ह़ाज़िर हुवा, दरवाज़े पर दस्तक दी और अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा यूं है : जिस ने आप से उम्मीद रखी और जिस ने आप के दरवाज़े पर दस्तक दी (या'नी Knock किया) वोह कभी ना उम्मीद नहीं हुवा, आप साह़िबे जूदो करम बल्कि जूदो सख़ा के चश्मे हैं । इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ घर में नमाज़ पढ़ रहे थे, नमाज़ अदा कर के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए तो देखा सामने एक दीहाती खड़ा है जिस की शक्लो सूरत गु़र्बत और भूक का ए'लान कर रही थी, ह़ज़रते इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने गु़लाम "क़म्बर" رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से फ़रमाया : हमारे ख़र्च में से कितना माल बचा हुवा है ? अ़र्ज़ की : दो सो दिरहम हैं जो आप के हु़क्म के मुत़ाबिक़ आप के अहले ख़ाना पर ख़र्च करने हैं । फ़रमाया : जाओ सब ले आओ क्यूं कि वोह शख़्स आया है जो फ़िलह़ाल मेरे घर वालों से ज़ियादा इन दिरहमों का ज़रूरत मन्द है ।

चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने वोह दिरहम उस फ़क़ीर को अ़त़ा फ़रमा दिये और फ़रमाया : येह ले लो और इन के कम होने पर मैं तुम से मुआ़फ़ी चाहता हूं क्यूं कि हमें हर ह़ाल में मेहरबानी करने का हु़क्म है, येह कम हैं अगर ज़ियादा होते तो वोह भी तुम्हें दे देता । फ़क़ीर ने दिरहम लिये और आप को दुआ़एं देता हुवा ख़ुशी ख़ुशी रुख़्सत हो गया । (ابنِ عساکر،14/185ملخصًا)

दे अ़ली असग़र का सदक़ा सरवरा पैकरे जूदो सख़ा फ़रियाद है
मुफ़्लिसो नाचारो ख़स्ता ह़ाल हूं मख़्ज़ने जूदो अ़त़ा फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 587)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सख़ावत । आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का सारा घराना ही सख़ी है । इन के नानाजान

صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم के लब पर "لَا (या'नी न)" नहीं था, जो मांगा जाता वोह अ़त़ा कर देते, "न" नहीं फ़रमाते थे। जिस को आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ ने अपने शे'र में यूं नज़्म किया :

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़्ह़ा तेरा   नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 15)

या'नी जो भी मांगने के लिये आए तो उसे येह नहीं फ़रमाते कि "नहीं" बल्कि जो भी हुवा अ़त़ा फ़रमा दिया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

दूसरे शहज़ादे का तआ़रुफ़

सुल्त़ाने करबला, सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे तिश्ना काम, नवासए शाहे ख़ैरुल अनाम ह़ज़रते इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ का मुबारक नाम हुसैन, कुन्यत : अबू अ़ब्दुल्लाह और अल्क़ाब (या'नी : Titles) : सिब्त़े **रसूलुल्लाह** और रैह़ानतुर्रसूल (या'नी रसूले पाक के फूल) हैं। आप رضی اللہ عنہ की विलादते बा सआ़दत (या'नी Blessed Birth) हिजरत के चौथे साल (4th year), 5 (Five) शा'बान शरीफ़ को मदीनए मुनव्वरह में हुई। हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने आप का नाम मुबारक "हुसैन" और "शुबैर" रखा और आप को अपना बेटा फ़रमाया। (اسد الغابہ، 2/25-26 ملتقطاً)

घुट्टी, अज़ान और अ़क़ीक़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने अपने प्यारे प्यारे नवासे ह़ज़रते इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ के सीधे (Right) कान में अज़ान दी, बाएं (Left) कान में तक्बीर पढ़ी, अपने मुबारक मुंह से घुट्टी अ़त़ा फ़रमाते हुए दुआ़ओं से नवाज़ा।

(اسد الغابہ، 2/25 ملخصاً)

हमारे हां लोग बच्चे का नाम रखने में जल्दी मचाते हैं जब कि मुस्तह़ब है कि बच्चे का नाम सातवें दिन रखा जाए और सातवें दिन अ़क़ीक़ा भी किया जाए।

नवासए रसूल की इ़बादात

ऐ आ़शिक़ाने इमामे हु़सैन ! हमारे आक़ा व मौला, शहीदे करबला ह़ज़रते इमामे हु़सैन رضی اللہ عنہ बहुत बड़े आ़बिदो ज़ाहिद और साजिदो सज्जाद भी थे चुनान्चे शबे आ़शूरा (या'नी दस मुह़र्रम की रात) इमामे हु़सैन رضی اللہ عنہ ने ह़ज़रते अ़ब्बास अ़लम दार رضی اللہ عنہ (जो कि आप के भाई थे) को इर्शाद फ़रमाया : किसी त़रह़ येह लड़ाई कल तक मुअख़्ख़र हो जाए (या'नी कल तक लेट हो जाए) और आज की रात हमें **अल्लाह** पाक की इ़बादत के लिये मिल जाए, **अल्लाह** पाक ख़ूब जानता है कि मुझे नमाज़, तिलावते कु़रआन, कसरत के साथ (या'नी बहुत ज़ियादा) दुआ़ मांगना और इस्तिग़फ़ार करना बहुत पसन्द है। (الکامل فی التاریخ،3/415)

अल्लाहु अक्बर ! हम मुह़िब्बाने सह़ाबा व अहले बैत और ख़ुसूसन मुह़िब्बाने इमामे हु़सैन رضی اللہ عنہ के लिये क़ाबिले ग़ौर बात है कि हम से फ़ज्र में नहीं उठा जाता और हमारे इमाम के सामने दुश्मनों का लश्करे अशरार मौजूद है जो ख़ून का प्यासा है, पानी नहीं मिल रहा, भूक व प्यास के आ़लम में नमाज़ का कैसा शौक़ है ! चाह रहे हैं कि एक रात और मिल जाए ताकि अपने रब की इ़बादत कर लें। सच्ची बात तो येह है कि मह़ब्बत इत़ाअ़त करवाती है। काश ! हमें सच्ची मह़ब्बत मिल जाए कि हम इत़ाअ़त भी करें उन की पैरवी भी करें। इमामे हु़सैन رضی اللہ عنہ बहुत नेक परहेज़गार और सज्दा गुज़ार थे। इन की अम्मीजान बीबी फ़ाति़मा رضی اللہ عنہا

भी बड़ी इ़बादत गुज़ार थीं, येह सारे का सारा घराना हमारे लिये सरमायए इफ़्तिख़ार है। हम इन की इ़बादात का सदक़ा मांगते हैं कि **अल्लाह** पाक हमें भी इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की इ़बादत का सदक़ा नसीब करे कि हमारा भी नमाज़ों में, तिलावत में ज़िक्रो अज़्कार और दुरूदो सलाम में दिल लग जाए।

ग़ौर फ़रमाइये ! दस मुह़र्रम की रात इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की ज़ाहिरी ज़िन्दगी मुबारक की आख़िरी रात थी मगर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़बादत का ज़ौक़ो शौक़ कि ऐ़न शहादत के वक़्त भी आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बारगाहे इलाही में सज्दे की ह़ालत में थे। काश ! हम भी इ़बादात करें, शुहदाए करबला के ईसाले सवाब के लिये नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करें, ख़ूब सुन्नतें सीखें और सिखाएं। काश ! काश ! काश ! हम ग़ुलामाने इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ भी इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के नक़्शे क़दम पर चलते हुए इ़बादतों और रियाज़तों में अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारें। याद रहे ! ह़दीसे पाक में है : बन्दा उसी के साथ होगा जिस के साथ वोह मह़ब्बत करता होगा। (بخاری،4/147،حدیث:6169) अगर हम ज़बान से इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मह़ब्बत के दा'वे करते रहें मगर आप की मुबारक सीरत को न अपनाएं तो फिर हमारी मह़ब्बत को चेलेन्ज हो सकता है ताहम जिस से मह़ब्बत करते हैं उन के नक़्शे क़दम पर चलना मह़ब्बत का आ'ला दरजा है। ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अपने मुबारक चेहरे पर अपने नानाजान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ सजाई हुई थी, आप के वालिदे मोह़तरम मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की भी घनी (या'नी भरी हुई) दाढ़ी शरीफ़ थी। अब हम ग़ौर करें कि हम कैसे मुह़िब्बाने अहले बैत और मुह़िब्बाने ह़सनैन

(या'नी इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के चाहने वाले) हैं कि ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़े फ़ज्र अपने ख़ैमे में बा जमाअ़त अदा फ़रमाई जब कि दुश्मन चारों त़रफ से तल्वारें चमका रहे थे और नेज़े और ढालें ताने हुए थे, अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अस्ल मह़ब्बत इन की पैरवी करने में है, इमामे आ़ली मक़ाम इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की मुबारक ज़िन्दगी से हमें येह दर्स मिलता है कि हमें भी पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करनी चाहिएं और वक़्त आने पर दीन की ख़ाति़र हर त़रह़ की क़ुरबानी पेश करने के लिये तय्यार रहना चाहिये। **अल्लाह** पाक हमें सह़ाबा व अहले बैत رَضِیَ اللہُ عَنْہُم की सच्ची पक्की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दीन की ख़िदमत का जज़्बा दीजिये सदक़ा नानाजान का फ़रियाद है
सुन्नतों की हर त़रफ़ आए बहार सदक़ा मेरे ग़ौस का फ़रियाद है
या शहीदे करबला फ़रियाद है नूरे ऐ़ने फ़ाति़मा फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 586, 588)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

मह़ब्बते अहले बैत

अल्लाह पाक हमें अहले बैते अत़्हार और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم की मह़ब्बत से मालामाल रखे, इन का इ़श्क़ रात दिन हमें तड़पाए, हमारे दिलों में इन की मह़ब्बत बढ़ती चली जाए क्यूं कि सह़ाबा व अहले बैत की मह़ब्बत हमारे ईमान का ह़िस्सा है, इस में कमी नहीं इज़ाफ़ा होना चाहिये। जहां भी सह़ाबा व अहले बैते किराम का मुआ़मला हो वहां हमारी आंखें बन्द हों। "असी मन्नण वाले आं सोचण वाले नईं" या'नी हम मानने वाले हैं सोचने वाले नहीं, हम इन के ग़ुलाम हैं, ग़ुलाम आक़ा पर कैसे उंगली

उठा सकता है और आक़ा के बारे में कैसे ग़लत़ सोच सकता है ! आक़ा, आक़ा हैं। हमारी सोच हमारी अ़क़्लें इतनी कहां हैं जो आक़ाओं की बातों को समझ सकें।

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूं रज़ा   बोलबाले मेरी सरकारों के

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 360)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आ़शूरा के दिन की तारीख़ पुरानी है

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मुह़र्रम शरीफ़ की दस तारीख़ (या'नी आ़शूरे के दिन) को ख़ुसूसी अहम्मिय्यत ह़ासिल है। आ़शूरे के दिन शहादते इमामे आ़ली मक़ाम इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के साथ साथ इस दिन को तारीख़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल है। ज़मानए जाहिलिय्यत में भी क़ुरैश यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखते थे, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी इस दिन का रोज़ा रखते थे। (بخاری،1/656،حدیث:2002) किसी दौर में इसी दिन का'बतुल्लाह शरीफ़ का ग़िलाफ़ तब्दील किया जाता था। (بخاری،1/536،حدیث:1592) कुछ अ़र्से पहले ज़ुल ह़ज में तब्दील होता था, आज कल नए साल की मुनासबत से ग़िलाफ़े का'बा मुह़र्रम शरीफ़ की पहली तारीख़ को तब्दील किया जाता है। मुसल्मानों में अस्ल (या'नी नए साल का आग़ाज़) येही (मुह़र्रम शरीफ़ की पहली तारीख़ से) है। लेकिन अब मुसल्मानों में इस का इतना शुऊ़र नहीं है।

आ़शूरा का दिन कैसे गुज़ारें......?

ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दस मुह़र्रम बहुत अ़ज़्मत वाला दिन है लिहाज़ा मुनासिब है कि जिस क़दर मुम्किन हो अच्छे काम किये जाएं। भलाइयों के इन मौसिमों को ग़नीमत

जानो और ग़फ़्लत (Heedlessness) से बचो । (التبصرة لابنِ جوزی،8/2) तो येह नेक काम कीजिये : ﴾1﴿ यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखिये और इस के साथ नवीं या ग्यारहवीं मुह़र्रम शरीफ़ का रोज़ा भी मिला लीजिये । (مسند امام احمد،1/518،حدیث:2154ماخوذاً) ﴾2﴿ ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : आ़शूरा के दिन जो हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास या'नी قُلْ هُوَاللّٰه शरीफ़ पूरी सूरत पढ़े तो उस की त़रफ़ रह़मान (या'नी **अल्लाह** पाक) नज़र फ़रमाएगा और जिस की त़रफ़ रह़मान नज़र फ़रमाए उसे कभी अ़ज़ाब नहीं देगा । (النور فی فضائل الایام والشہور،ص124)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के आ़शूरा के मा'मूलात

शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के फ़रज़न्द शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के घर साल में दो मह़फ़िलें हुवा करती थीं : ﴾1﴿ मह़फ़िले मीलाद ﴾2﴿ मह़फ़िले शहादते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ । दूसरी मह़फ़िल का ज़िक्र करते हुए ख़ुद फ़रमाते हैं : येह मह़फ़िल बरोज़ आ़शूरा या उस से एक दिन क़ब्ल होती (इस में) चार, पांच सो और कभी एक हज़ार तक भी अफ़राद जम्अ़ हो जाते और सब मिल कर दुरूद शरीफ़ पढ़ते । उस के बा'द ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ, ह़ज़रते इमामे ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के ह़दीसे पाक में आने वाले फ़ज़ाइल बयान करते । फिर ख़त्मे क़ुरआने करीम किया जाता और पन्ज आयह (पांच आयतें) (हमारे यहां आज भी लोग जब फ़ातिह़ा देते हैं तो येह पांच आयतें पढ़ते हैं) पढ़ कर खाने की जो चीज़ मौजूद होती है उस पर

फ़ातिह़ा दी जाती। शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ आ़शूरे का दिन भी मनाते और ईसाले सवाब व नियाज़ वग़ैरा भी करते थे। (فتاویٰ عزیزی، 1/104بتغیرٍ قلیلٍ)

आ़शूरा के दिन का रोज़ा

आ़शूरे का रोज़ा पहले फ़र्ज़ था फिर रमज़ान के रोज़े से इस की फ़र्ज़िय्यत मन्सूख़ (या'नी Cancel) हो गई। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/180)

अब आ़शूरे का रोज़ा रखना फ़र्ज़ नहीं मगर इस दिन का रोज़ा रखने वाले के लिये बड़ा सवाब है। इस सिल्सिले में दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये :

2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ मुझे **अल्लाह** पाक पर गुमान है कि आ़शूरा का रोज़ा एक साल पहले के गुनाह मिटा देता है। (مسلم، ص454، حدیث:2746ملتقطاً) (नबी का गुमान यक़ीन के दरजे में होता है) (नुज़्हतुल क़ारी, 1/675) ﴾2﴿ आ़शूरा का रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर है। (مسند امام احمد، 8/381، حدیث:22679)

मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : आ़शूरा के दिन का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो।

(مسند امام احمد، 1/518، حدیث:2154)

यहां मुख़ालफ़त से मुराद येह है कि आ़शूरा के दिन से पहले या बा'द में एक दिन का रोज़ा रखो कि आ़शूरा की दस तारीख़ को येह लोग रोज़ा रखते हैं तो हम इन से अलग हो जाएं कि हम दो दिन का रोज़ा रखें पहले या बा'द में या'नी नव दस का रखें या दस ग्यारह का रखें यूं इन की मुख़ालफ़त करें तो इन से हमारा अन्दाज़ तब्दील हो जाए, बेहतर येही है कि नव दस का या दस ग्यारह मुह़र्रम का रोज़ा रखा जाए।

ज़ाहिरी त़ौर पर दौरे नबवी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में आ़शूरा का रोज़ा

ह़ज़रते रुबय्यिअ़ बिन्ते मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़शूरा के दिन अन्सार की आबादियों में ख़बर भेजी जिस ने सुब्ह़ इस ह़ाल में की है कि वोह रोज़ादार नहीं तो बक़िय्या दिन रोज़ादार की त़रह़ रहे और जिस ने सुब्ह़ इस ह़ाल में की है कि वोह रोज़ादार है तो वोह रोज़े से रहे, इस के बा'द हम आ़शूरा का रोज़ा रखते थे और बच्चों से रखवाते थे और उन के लिये ऊन का खिलोना बना देते जब कोई खाने के लिये रोता तो वोह खिलोना उसे दे देते यहां तक कि इफ़्त़ार का वक़्त हो जाता। (بخاری،1/645،حدیث:1960)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! ह़ज़रते रुबय्यिअ़ बिन्ते मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا वोह मुबारक सह़ाबिया हैं जिन के अब्बूजान ह़ज़रते मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के साथ मिल कर अपनी छोटी सी उ़म्र में बहुत बड़े दुश्मने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा, अबू जह्ल को वासिले जहन्नम (या'नी क़त्ल) किया था जिस ने मुसल्मानों को तंग कर रखा था। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जब उस की मौत की ख़बर आई तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सज्दए शुक्र अदा किया।

ऊपर बयान की गई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक से भी साबित होता है कि रमज़ानुल मुबारक की फ़र्ज़िय्यत से पहले आ़शूरा का रोज़ा फ़र्ज़ था।

बच्चों को भी बचपन से अच्छी आ़दात सिखाएं

"शर्ह़े इब्ने बत़्त़ाल" में है : उ़लमाए किराम का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इबादत व फ़राइज़ बालिग़ होने पर ही लाज़िम होती हैं मगर कई उ़लमाए किराम इस बात को मुस्तह़ब क़रार देते हैं कि बच्चों की

ता'लीमो तरबियत के लिये, उन्हें इ़बादात व रोज़े की बरकतें ह़ासिल करवाने के लिये येह इ़बादतें करवाई जाएं ताकि उन की आ़दत बने और बालिग़ हो जाने के बा'द उन के लिये येह इ़बादतें करना आसान हो । (شرح ابن بطال، 4/107)
याद रखें अगर हम बच्चों को नफ़्ल रोज़ा रखवाते बल्कि फ़र्ज़ रोज़ा भी रखवाते हैं और बच्चा खाना मांगता और रोता धोता है तो उसे खाना खिलाना होगा, येह अ़मल ह़दीस में बयान हुवा है। और इस लिये भी कि उस पर रोज़ा फ़र्ज़ ही नहीं । इसी त़रह़ मुह़र्रम शरीफ़ का रोज़ा भी बच्चों को मारधाड़ कर के ज़बर दस्ती नहीं रखवा सकते, हां इन को शफ़्क़त से, प्यार से, तोह़फ़े का सच्चा वा'दा कर के मसलन आप रोज़ा रखेंगे तो आज हम आप को येह डिश खिलाएंगे या आप को फुलां खिलोना ला के देंगे, अगर सो फ़ीसद (Hundred percent) सच्ची निय्यत हो कि आप खिलोना ला कर देंगे या जो डिश आप कह रहे हैं बना कर देनी है तो कहने में ह़रज नहीं, और यूं اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم उस का ज़ेह्न बनेगा और वोह रोज़ा रख लेगा ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आ़शूरा का रोज़ा मग़्फ़िरत का सबब बन गया

आ़शूरे के रोज़े की अहम्मिय्यत का इस से अन्दाज़ा लगाएं कि एक आ़लिम साह़िब को ख़्वाब में देखा गया, देखने वाले ने पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहने लगे : 60 साल तक आ़शूरा का रोज़ा रखने की बरकत से मेरी मग़्फ़िरत कर दी गई । (لطائف المعارف، ص57)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! इस दौर में भी ऐसे कई लोग मिलेंगे जो बरसों से आ़शूरा का रोज़ा रखते हुए आ रहे हैं, मैं अपना बताऊं तो न जाने कब से मैं आ़शूरे

के रोज़े से मुशर्रफ़ हो रहा हूं, जब से होश संभाला है शायद मुझे भी साठ साल हो गए हों। दा'वते इस्लामी के लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आ़शूरा का रोज़ा रखते होंगे, जो दा'वते इस्लामी में नहीं हैं उन मुसल्मानों की भी एक बहुत बड़ी ता'दाद आ़शूरा का रोज़ा रखती होगी। दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आ़शूरा का रोज़ा रखने की बा क़ाइ़दा तरग़ीब दिलाई जाती है और फ़ैज़ाने मदीना में सह़री का इन्तिज़ाम भी होता है। येह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत वाला दिन है अगर मजबूरी न हो तो इस का रोज़ा छोड़ना नहीं चाहिये।

ख़ैराते आ़शूरा की बरकात

आ़शूरा (या'नी दस मुह़र्रम शरीफ़) के रोज़ मुल्के "रै" (रै को आज कल तेहरान कहते हैं, येह ईरान का दारुल हुकूमत (Capital) है) में क़ाज़ी के पास एक फ़क़ीर (Poor man या'नी ग़रीब आदमी) आ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : मैं एक बहुत ग़रीब और इ़यालदार या'नी बाल बच्चों वाला आदमी हूं, आप को यौमे आ़शूरा का वासित़ा देता हूं ! मेरे लिये दस किलो आटा, पांच किलो गोश्त और दो दिरहम का इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये। क़ाज़ी (Judge) ने ज़ोहर के बा'द आने का कहा। जब फ़क़ीर या'नी वोह ग़रीब आदमी वक़्ते मुक़र्ररा पर आया तो उस को कहा अ़स्र में आना। वोह अ़स्र के बा'द पहुंचा फिर भी क़ाज़ी ने कुछ न दिया, ख़ाली हाथ ही टरख़ा दिया। उस ग़रीब आदमी का दिल टूट गया। वोह रन्जीदा रन्जीदा एक ग़ैर मुस्लिम के पास पहुंचा और उस से कहा : आज के मुक़द्दस दिन के सदक़े मुझे कुछ दे दो। उस ने पूछा : आज कौन सा दिन है ? फ़क़ीर ने कहा : आ़शूरा और

आ़शूरा के कुछ फ़ज़ाइल बयान किये जिसे सुन कर उस ने कहा : आप ने बहुत ही अ़ज़मत वाले दिन का वासित़ा दिया है, अपनी ज़रूरत बयान कीजिये ! ग़रीब आदमी ने अपनी ज़रूरत बयान कर दी । उस शख़्स ने दस बोरी गन्दुम, सौ सेर गोश्त और बीस दिरहम पेश करते हुए कहा : येह आप के अह्लो इ़याल के लिये ज़िन्दगी भर हर माह इस दिन की फ़ज़ीलतो अ़ज़मत के वासित़े मुक़र्रर है या'नी येह हर महीने दिया करूंगा । रात को क़ाज़ी साहि़ब ने ख़्वाब देखा कि कोई कह रहा है : नज़र उठा कर देख ! जब नज़र उठाई तो दो आ़लीशान मह़ल (Luxurious palace) नज़र आए, एक चांदी और सोने की ईंटों (Gold bricks) का और दूसरा सुर्ख़ याक़ूत या'नी लाल मोती का था । क़ाज़ी ने पूछा : येह दोनों मह़ल किस के हैं ? जवाब मिला : अगर तुम उस ग़रीब साइल की ज़रूरत पूरी कर देते तो येह तुम्हें मिलते मगर चूंकि तुम ने उसे (ख़ाली हाथ) लौटा दिया था इस लिये अब येह दोनों मह़ल फ़ुलां ग़ैर मुस्लिम के लिये हैं । क़ाज़ी साहि़ब की आंख खुली तो बड़े परेशान हुए । सुब्ह़ हुई तो ढूंडते हुए उस ग़ैर मुस्लिम के पास पहुंचे और उस से पूछा : कल तुम ने कौन सी "नेकी" की है ? उस ने पूछा : आप को कैसे पता चला ? क़ाज़ी ने अपना ख़्वाब सुनाया और पेशकश की, कि मुझ से एक लाख दिरहम ले लो और कल की "नेकी" मुझे बेच दो । उस ग़ैर मुस्लिम ने कहा : मैं रूए ज़मीन की सारी दौलत ले कर भी उसे फ़रोख़्त नहीं करूंगा, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत व इनायत बहुत ख़ूब है । येह कहने के बा'द वोह कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया । (روض الریاحین، ص275) (मुह़र्रम के फ़ज़ाइल, स. 1)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

पता चला ! आ़शूरा के दिन राहे ख़ुदा में ख़र्च करना बड़ी फ़ज़ीलत का काम है कि मुसल्मान क़ाज़ी ने उस ग़रीब को सिर्फ़ धक्के खिलाए कि ज़ोहर में आओ, अ़स्र के बा'द आओ, फिर भी उस को कुछ दिया नहीं और टाल दिया तो उस का दिल टूट गया, अब वोह नाचार ग़ैर मुस्लिम के पास पहुंचा, उस ग़ैर मुस्लिम ने मांगने से ज़ियादा दे दिया और इस त़रह़ उस को ईमान की दौलत नसीब हो गई ।

आ़शूरा की रात राहे ख़ुदा में दिल खोल कर ख़र्च भी किया जाए और येह दिन, रात नेकियों में बसर किये जाएं, मसलन फ़ैज़ाने मदीना में गुज़ारें, आप इधर उधर जाएंगे तो आप को गुनाहों भरा माह़ोल मिलेगा, अ़जीब क़िस्म के लोग गले में ढोल डाल कर बजाते, उछल कूद करते और ख़ूब हल्ला गुल्ला करते हैं । यूं कहिये चारों त़रफ़ फ़िस्क़ो फ़ुजूर या'नी गुनाहों भरा मज्मअ़ होता है, अगर सैरो तफ़्रीह़ की निय्यत थी तो अपनी निय्यत की इस्लाह़ कर लें, मैं आप के फ़ाएदे के लिये कह रहा हूं, बाहर जा कर गुनाहों के बग़ैर पलटना मुश्किल है । **अल्लाह** करीम हम सब को मह़फ़ूज़ रखे और जो हमारे मुसल्मान भाई इन गुनाहों में पड़ते हैं उन को भी सच्ची तौबा नसीब फ़रमाए और सब मस्जिदों में आएं **अल्लाह** पाक की इ़बादत करें, येह ईमान अफ़्रोज़ बरकत वाला दिन है, इस दिन **अल्लाह** पाक की इ़बादत करेंगे तो **अल्लाह** पाक राज़ी हो कर हो सकता है हमारी मग़्फ़िरत कर दे, हमें जन्नत की ने'मतें नसीब कर दे ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ह़फ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُلِلّٰہ अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ / ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। مَاشَآءَ اللہ الْکَرِیْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं से ह़िस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025